कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ भजनरत्नाकर ॥

॥ पहिला भाग ॥

॥ भजन ॥

गणपति बिघन बिनाशन हारे । लंबोदर पीतवर हे फणिमणि मुकुट नयन रतनारे । गजमणि ल गले बिच सोहै भाललालमें चन्द्रकलारे । क लेत देत जननी जब ठुमुक चलत नूपुरझन । रिद्धि सिद्धि दोउ चंवरडुलावत सुरसमूहलखि सुखारे ॥ उठि प्रभात गिरिजा सुत सुमिरै दुख द्र न आवत द्वारे । देबी सहाय बसे आनंद बन बर देहु महेश दुलारे ॥ १ ॥

॥ भजन ॥

जाऊँ जाऊँरे सांवलिया तुमपरवारनारे । जबसे न्म लियो हरिबृज में सबको दुख हऱ्यो एकछन में

जसुदा भरम भुलानी झुले पालनारे । मात पिता
बन्ध छुड़ायो नन्दराय घर धेनु चरायो कूद
कालीदह बिषधर नाथनारे । केशी कंश हत्यो बृ
रक्षक अका बकासुर नायक तछक यमला अर्ज
और पुतनातारनारे ॥ इन्द्र रिसाय चढ्यो बृजउ
कोउन राखन हारा भूपर कृपाकरी कान्हा नस
गिरिवर धारनारे ॥ २ ॥

॥ भजन ॥

श्यामको संदेशा उधो पाती लेके आयोरे । प
तो उठाय लीन्ही छातीसो लगायलीन्ही घूघट
ओट देके उधो समुझायोरे । बस्ती उजाड़ द
उजड़ी बसाय लीनी कुब्जा पटरानी कीन्ही मो
सोहायोरे । सूरश्याम से यों जाय कहियो जी
खसमकिन भसम रमायोरे ॥ ३ ॥

॥ भजन ॥

गोपाल प्यारे मांगतमाखनरोटी ॥ टेक ॥ अ

ता गोपालजी को रोटिया बनादेउ एक छोटी एक मोटी
गोपाल०॥ १॥ अपने गोपालजी को झगुलीसिलाय
बऊँ हीरालाल जड़ी टोपी ॥ गोपाल० ॥ २॥ अपने
अगोपाल जी को ब्याह करादेउँ बड़े भूपकी बेटी ॥
नउपाल० ॥३॥ सूरदास अस कहत जसोदा काहे को
सटी में लोटी ॥ गोपाल० ॥ ४ ॥

दूसरा भाग ॥ भजन ॥ २ ॥

रामको अधारा तेरेनाम को अधारा । मेरी मेरी
पहत जात रैन दिन सारा । सांचो हरिनाम और
को पसारा ॥ रामको० ॥ १ ॥ भक्तन पर
पड़ी आनि खंभ फारा । हिरनाकश्यप मार के
ह्लाद को उबारा ॥ रामको० ॥ २ भस्मासुर
म कियो शंकर दुख टारा । गिरजाको रूप धर्‌यो
मुकुट वारा ॥३ ॥ खेलत गेंद गिर्‌यो जाय जमुन
धारा । अबतो गेंद मिलत नाहीं नन्द के
रा ॥रामको० ॥४॥ कालिदह में कूद परे नाथ्यो
कारा । कुवलया को दन्त तोर कंसको पछारा॥

॥ रामको० ॥५॥ लंकासो अचल राज छनमें विग
दुष्टन को मारि २ संतको उबारा ॥ रामको० ॥ ६
द्रोपदीकी लाजराख शभा चीरबाढ़ा भिलनीके बैरख
कीन्होंनिस्तारा ॥रामको०॥७॥ सूरदास काह कहूंना
जाननहारा॥ उग्रसेन राजदीन्हे होत जय २ कारा
रामको० ॥८॥ ॥ भजन ॥२॥

ठुमुक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियां। कि
किर उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय धायमात ग
लेनदशरथकीरनियां॥ठुमुक० ॥२॥अंचलराजअंग
बिबिध भांतिसो दुलारे तनमन धन वारडार क
मृदु बचनियां ॥ ठुमुक० ॥ २॥ बिद्रुमसे अरुण अ
बोलत मृदुबचन मधुर रघुपति की छबि समन
छबि बनियां ॥ ठुमुक० ॥ ३ ॥ मेवा मोदक रसाल
भावेंसो लेहुलालपानकंचन घुनघुनियां ॥ ठुमुक० ॥

॥ भजन ॥

सीतापति रामचन्द्ररघुपति रघुराई। रसनारस

न सन्तनको दरशदेत बिहसत मुखमन्दचन्द्रसुन्दर
सुख दाई ।। सीता० १।। केसर कोतिलकभाल मानोरबि
प्रातकाल श्रवण कुंडल झलमलात रति पति छबि
छाई।। सीता० ।। २ ।। मोतिनकी गरेमाल तारगण तन
हाल मानोगिर शिखरफोर सुरसर चलिआई।। सीता।।
लत चतुर चपल चालसुन्दर दृग अति बिसाल भृकुटी
नअनल पाय नासिकासोहाई ॥ सीता० ।।४।। सावलो
त्रिभंग अंग काछ्र कटिकरनिखंगमानोरूपमायाछबि
पापी बनिआई।। सीता० ।५।। सुरनर मुनि सकलदेव
वाबिरंचिकरतसेव कीरत ब्रह्माण्डतीनलोक बीच छाई
सीता० ।।६।। सखी सहित सरजूतीर बैठ रघुबंसबीर
रखि निरखि तुलसीदास चरनन रज पाई ।। ९ ।।

॥ भजन ॥

विनकाज आज महराज लाजगईमेरी ॥ दुखहरो
रकानाथ शरणमैतेरी ॥ दुशाशन बंश कुठार महा
खदाई । कर पकरतमेरीचीर लाज नहीआई । अब

भयोधरमको नाश पाप रह्यो छाई।लखिअधमसभाके म
ओर नारि बिलखाई ।। शकुनी दुर्योधन कर्ण खड़ेखड़
घेरी।।दुखहरो द्वा०।।१।।तुम दीननकी सुधि लेतदेवकील
नन्दन । महिमा अनन्त भगवन्त भक्त दुखभञ्जन।म
तुम किया सिया दुख दूर शम्भु धनु खण्डन । अर्तभ
आरत मदनगोपाल मुनिन मनरंजन । करुणा निधा न
भगवान करी क्यादेरी ।। दुख० ।।तुम सुनि गणपता
की टेर बिश्व अबिनाशी । ग्रह मारि छुड़ाई बंदिकान
गजफांसी ।। मैं धरो तुम्हारे ध्यान द्वारकाबासी । अख
काहे राज समाज करावत हांसी ।। अब कृपाकरोयख
नाथ चरन चितचेरी ।। दुख० ।। तूमपति राखीप्रहारि
दीन दुख टार्‌यो । भयें खंभ फार नरसिंह अनन्त
संहार्‌यो । व्रज खेलत केशी आदि बकासुर मार्‌यो
मथुरा मुष्टिक चाणुर कंशको मार्‌यो । तुम पितामह
की जाय कटाई बेरी ।। दुख० ।।४।। भक्तन हितले
तार कन्हाई तुमने । नल कुवरकी जड़ जोनी छुड़

मने ॥ जलबरसत प्रभुता अगम दिखाई तुमने । नख
र गिरिवर धर ब्रज लियो बचाई तुमने ॥ प्रभु अब
लम्ब क्या करी हमारी बेरी ॥ दुख० ॥ ५ ॥ बैठे सबराज
माज नीत निज खोई । नहीं करत धर्मकी बात
भामें कोई ॥ पांचो पति बैठ मौन कौन गति होई
नन्दनंदनको नाम द्रोपदीरोई ॥ करिकरि विलाप
ताप सभा में टेरी ॥ ६ ॥ सुनि दीन बंधु भग-
ान भक्त हितकारी । हरि भये चीरमें आप हर्‍यो
ख भारी । खैंचतहारी मतिमंद वीइ वलकारी, हरखत
रखत सुर सुमन वजावत भेरी ॥ दुख. ॥ ७ ॥ क्याकरी
ारिकानाथ मनोहर माया । अम्बरका लगा पहाड़
न्तनहि पाया ॥ तिहुंलोक चतुर्दशभुवन चरिदर
ाया । बंदित गणेशपरसादकृष्णगुणगाया । दीनन
दीनानाथ विपति निरवेरी ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ तीसरा भाग ॥ ३ ॥ १ ॥

हे गोविंद राखुशरन अबतो जीवन हारे । हेगो० ।

नीर पीवन हेतगयो सिंधुके किनारे । सिंधु बी
बसत ग्राह चरण धरि पछारे ! हेगो० ॥ चारप
युद्ध भयो लेगयो मझधारे । नाक कान डूब
लागे कृष्णको पुकारे ॥ हेगो. । द्वारका में शब्द भय
गरुड़ तजि सिधारे । ग्राहहूको मारके गजरा
को उबारे । हेगो० । सूरदास आस चरन नंनकेदुल
मेरो तेरो न्यावहै यमराज के दुवारे ।। हेगो० ॥ ३

॥ भजन ॥४॥

फुलन को माला हाथ फुली डोल आली स
उझकि झरोखे झांके नन्दनी जनककी॥ फुलनकी
सांवरो सलोनो गात को कहैपितासोबातछांडदे प्रति
राजाधनुष तोड़नकी । देखि रघुनाथसोभासियाज
मन लोभा, एकटकठाढी मानोपुतरी कनककी ॥ तुल
हियेकी जान तोड़िहैं पिनाक तान छोटीसीधनुहि
मानो लड़िका खेलनकी ॥ झकने०॥

॥ चौथा भाग भजन ॥ १ ॥

बैरागयोग कठिन उधो हमन करबहो॥ कैसे तजब
सो देश जटामुकुटधरबभेश अंग विभूतिलाय जहर
भाय मरबहो । बैराग० ॥ कैसे तजब अंग चीरमृग
जराला धरि शरीर सुखमसेज छाड़ि भुइयां कैसपड़बहो
राग० । जमुना जल अति गंभीर तनमननहिं धरत
र कृष्ण बिरह लागि बरु डूबि मरबहो ॥ बैराग०॥
कतो हम दुबल गात दूजे लिखत बिरह पात ॥
र श्याम दरश बिना प्राण तजब हो । बैराग० ॥

॥ भजन ॥

देखोरी एकबाला जोगी द्वारेमेरे आयोरी ॥ बाघम्बर
ताम्बरओढ़े शीशनाग लपटायारी । माथेवाकेतिलक
न्द्रमा जोगी जटा बढ़ायोरी ॥ भिक्षाले निकसीनन्द
नी मोतियनथार भरायोरी । लौंभिक्षा योगी जा आ
नको मेरो गोपाल डेरायारी ॥देखो०॥ नाचहियेतेरी
नियां दौलत नाचहिये तेरी मायरी । अपनेगोपाल

जीको दरश करादे मैं दरसन को आयारी ॥देखो
लेबालक निकसीनन्दरानी शंभू दरशन पायारी।सा
बेरपरिक्रमा करके सिंघीनाद बजायारी । देखोरी०॥
सूरदास बैकुंठ लोकमें धन्य यशोमति मायारी ॥ ती
तीन लोक के अंतर जामी बालक रूप देखायारी०॥

॥ भजन ॥ ३ ॥

जाऊँ जाऊँरे राम छवि वारनारे । जबसे जन्मअव
धपुर लीनो सुरनर मुनि सबको सुखदीनौ । कौशिल
मातु खिलवत गोदी लालनारे ॥जाऊँ०॥ रावणहा
भुभार उतार्यो अंगद तात बालि संघार्यो । गौत
रिषीकीनारि अहिल्या तारनारे ॥ जाऊँ० ॥ मिथि
पुरमें धूम मचाई । सभाबीच पहुंचे यदुराई तीनटू
धेनु किया सियाजीके कारनारे॥जाऊँ०॥माधोमुनि
बनसे धाये। जनक नृपतिसे आनि मिलाये रामच
का जन्म जानके बनको तुरत सिधारनारे ॥ जाऊँ

॥ भजन ॥ ४ ॥

दयानिधि तेरी गति लखि न परे । धनते ध

रम से अधरम अकरम कर्मकरे । पिता बचनमेटेसो
पीसो प्रहलाद करे ताकी बंदी छुड़ावनको प्रभुनर
सिंहरूपधरे । एकगउजोदेत विप्रको सो सुरलोकतरे ॥
कोटीन गउ राजा नृग दीन्ही सो भवकूप परे । वेद
विदित तेरो यशगावे सो बलि यज्ञ करे ॥ ताको
बांधि पताल पठायो कैसेके सूरतरे ॥ ४ ॥

पांचवा भाग ॥ भजन ॥ १ ॥

मेरेतो गिरधर गोपाल दूसरान कोई । मैं तो रही
जान जक्त देख रोई ॥ मात पिता भाई बन्धु
सरा न कोई ॥ मेरेतो० ॥ सन्तन ढिग बैठि२ लोक
लाज खोई । अबतो बात फैलगई जाने सब कोई ।
मेरे० ॥ प्रेमकीमथनिया कर सूरत सो बिलोई । अ
त घृत काढिलिया छांछ पिये कोई ॥मेरे०॥जाके
सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई । शंखचक्र गदा पद्म
कंठमाला सोई ॥मेरे०॥ मै तो हँसी पिय देख जगत
ज्ञान रोई । असुबन जल सीच २ प्रेम बेल बोई ।

ह्मारी प्रभु लगन लागी हानि हो सोहोई ।मेरे०॥

॥ भजन ॥ २ ॥

जगके रूठे से क्या हुआ जाके राम हैं रखवार
॥ टेक ॥ चल देख प्यारे सभा में जहां कपट पांसे
द्रौपदी को चीर बढायके खैचत दुशासन हरे ॥ज०
चल देख प्यारे समर में तैयार दोदल खरे । चिगन
चे भरथूल के गज घंट वा पर घरे ॥ जग० ॥ च
देख प्यारे खम्भ में नरसिंह हो अवतारे। हिरणाक्ष
बिदार के प्रहलाद रक्षा करे ॥ जग० ॥ चल दे
प्यारे लंक में निसंकट बिभिषण घरे ॥ तुलसी सर
राम को निज अवध में पगतरे ॥ जगके० ॥

॥ भजन ॥ ३ ॥

करमगति टारे नाहिं टरे : कहां बसे राहु कहां
रवि शशि आन संयोग परे ।। गुरु वशिष्ट औ
गुण आगर रचि रचि लगन धरे । पितामरण

रण सियाको बिपत में बिपतपरे । भारत में भरुही
ो अण्डा घंटा टूटपरे ॥ हरिश्चन्द्र से दानी राजा
ाचें को पानी भरे ॥ तीन लोक भावी के बस में
ुरनर मुनी सगरे । सूरदास होनी सोइहोगी काहेको
ोच करे ॥ करम० ॥ ३ ॥

॥ भजन ॥ २ ॥

साचे मनके मीता प्रभुजी सांचे मनके मीतारे ॥
ब सेवरी काशीमें आई कब पढ़ि आई गीतारे ॥
ठे फल सेबरी क खाये नेक लाज नहिं कीतारे ॥
रण छुवत तरगई अहिल्या गिद्धराज गतिकीनारे ॥
का पति को गर्व हन्यो औ राज विभीषण दीनारे ॥
ुग्रीव सखा किये रघुनन्दन बानर किये पुनीतारे ॥
ुफल यज्ञमुनिजी के कीना सब भूपन जसलीतारे ॥
ुलसीदास छबि निरख जानकी मन वांछित
फल लीतारे ॥ ४ ॥

॥ छठवां भाग भजन ॥ ४ ॥

रामभजा सोजीता जगमें राम भजा सो जीतारे ॥
हाथ सुमिरनी बगल कतरनी पढ़े भगवत गीतारे ॥
हृदय शुद्ध कियो नाहिमूरख कहतसुनतादिनबीतारे ॥
आन देवकी पूजाकीनी हरि सो रहा अभीतारे ॥
धन जोबन तेरा योंही जायगा अंतसमय चला रीतारे ॥
बावरिया न बावरी पुरा फन्द जाल सब कीतारे ॥
कहत कबीर कालयों खायगा जैसे मग में चीतारे।
रामभजो सो० ॥ १ ॥

॥ भजन ॥ २ ॥

जागिये कृपा निधान पंछी बन बोले। चन्द्र किरन मलिन भईचकई पिय मिलन गई, बिबिध मंदचलत पवनपल्लव द्रुमडोलै। प्रात भानु प्रगटभयो रजनी को तिमिरगयो भ्रूवर करत गुंजगान कमलन द्रुमडोले। ब्रह्मादिक धरत ध्यान सुर नर मुनि करत गान जागन की वेर ज्ञान नयन पलक खोले।

तुलसीदास अति अनन्द देखके मुखारबिन्द दीनन को देत दान भूषण बहुमोले ॥ २ ॥

॥ भजन ॥ ३ ॥

तजोरे मन हरि विमुखन को संग । जाके संग कुमति मति उपजत पड़ते भजन में भंग ॥ तजोरेम० कागा काह कपूर चुगाये श्वान नहाये गंग । खर को काह अरगजा लेपन मर्कट भूषन अंग ॥ त०॥ बान पखाने बेधत नाहीं खाली जात निखंग । कहा होत पयमान कराए बिष नहिं तजत भुअंग । सुर दास काली कामरी पर चढ़त न दूजो रंग॥ तजोरेम०

॥ भजन ॥ ४ ॥

हमारे प्रभु औगुन चित न धरो । समदर्शी हैं नाम तुम्हारो सोई पार करो । एक नदिया एकनार कहावत मैलो नीर भरो । जब दोनों मिलि एकबरन भई गंगा नाम परो । एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो । सो दुबिधा पारस नहिं

राखत कंचन करत खरो ॥ एक मायाएक ब्रह्मकहावै सूरश्याम झगरो । कैया को निर्बाह करो प्रभु एक प्रण जात टरो ॥ ४ ॥

॥ सातवां भाग ॥ भजन ॥ १ ॥

मोसम कौन कुटिल खल कामी । तुमसे काह छिपी करुणा निधि तुम प्रभु अन्तरजामी ॥ भरिभरि उदर बिषरश चाखत जैसे सूकर ग्रामी । जो तन दीन ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी । जहं सत संग तहां अति आलस बिषय न संग बिसरामी ॥ मो० ॥ श्रीपति चरण छांडि के बिमुखी न कर करत गुलामी । मोसम पतित अधम परनिन्दकसब पातितन में नामी । तुलसीदास पर करहु कृपा अब सुनिये श्रीपति स्वामी ॥

॥ भजन ॥ ६ ॥

सांझहि से हरि पंथ निहारे ॥ टेक ॥ रचिकरि ललिता भवन आपनो सुमन सुगंध सेज सवारे ॥

सांझहिं से हरि पंथ निहारे ॥ टेक ॥ रुचिकरि ललिता भवन अपनो सुमन सुगंध न सेज संवारे ॥ सांझहिं० ॥ कबहुंक ठाढ़ि गलिनमग जोहत अजहूं न आये श्याम पियारे ॥ सांझहिं० ॥ कबहुंक निकलि झरोठे ठाढ़ी कबहुंक गनत गगन केतारे ॥ सांहि ॥ सूरश्याम बिनु बिलखित बाला जहँ तहँ तमचर शब्द पुकारे ॥ ७ ॥

॥ आठवां भाग भजन ॥ १ ॥

जै गणेश जै गणेश जै गणेश कहिये । जाके गुण कहत नित्त चारो फल लहिये । विद्या बुद्धि सागर अरु मंगल गुण आगर हैं । ऐन चैन रिद्धि सिद्धि नित नित सो चहिये । कोटि कोटि विघ्न सब सुमिरत जेहि होत दलन । दायक सुखदायक परमानन्द लहिये ॥ गणपति गुरु ज्ञान मान निर्भय प्रभु चरन ध्यान । गोपी निज दास जान प्रभु न राखत चाहिये ॥ १ ॥

॥ भजन ॥ २ ॥

माधो कहिन जात दुख बृजके । घर बछरु घन गैया रोवै, ग्वाल बाल कुंजनके ॥ बृन्दावन वन सूखन लागे, रोवत पंछी बनके ॥ माधो० ॥ जैसे मणिविन बिकल भुजंगहै छुटतबछरु गौवनके । वैसे नर नारी गोकुलके पंथनिहारिरहेचरननके ॥ माधो० ॥ जलविन मीन कमल तनतलफे शोचत धनजीवनके ॥ स्वाती जलविनु चातक, जैसे सोई हालगोपिनके ॥ माधो० । लक्ष्मीनाथ कृपानिधि स्वामी सांचकरो निज प्रणके । करुणा करि प्रभु दर्शन दीजै मोहिं भरोस चरनके ॥ माधो० ॥

॥ भजन ॥ ३ ॥

प्रभु तुम कहां न प्रभुता करी । राजा दशरथ गृह जन्म लीन्हो नगर अजोध्या हरी बिश्वामित्र के यज्ञ रक्षकै गौतम की त्रिया तारी ॥ प्रभु० जन कपुरमें यज्ञ जादिन मिथा मोचन खरी ॥ गाहिभनुप

रघुनाथ तोऱ्यो सकल जैजै करी प्रभु० गोकुला घन घेर आयो इन्द्र आज्ञां करी। बूडत बृज गोपाल राखेव नखपै गिरवर धरी। प्रभु० ॥ साजि दल शिशुपाल आयो सोधिकै शुभ घरी। रथमरचढ़ि गोपाल आये हरि रुक्मीनी हरी ॥ प्रभु० ॥ दास गिरधर पड़े हैं गाढ़े जपत हैं हरी हरी ॥ हमरी बार बिलंब लायो कहां गये नरहरी ॥ ३ ॥

आठवां भाग भजन ॥ १ ॥

माई मैं चन्द्र खिलौना लैहौं। सुरभी को पय पान न करिहौं बेनी सिर न गुहैहौं ॥ मोतीमाल धरौं नहिं उर पर कठुला गरन धरैंहौं ॥ जैहौं भागि लोटिहौं छितिपै तेरी गोद न अहौं ॥ लालन होइहौं नन्दबबा को तेरो सुत न कहैहौं। कनिया लै समु झावै यशोदा बलदेवहिं न सुनैहौं ॥ चंन्दासोहत निरमल जैसो तैसो दुलहिन लैहौं। तेरी सौं मेरी सुन मैया अबहीं ब्याहन जैहों। सूरदास सब सखा बराती

आनंद मंगल गैहों ॥ १ ॥

॥ भजन ॥ २ ॥

ऊधो धन तुमारो व्यवहार । धन वे ठाकुर धनवे सेवक, धन हम वरतन हार ॥ आमहि काटि बबूर लगावत चंदन झोंकत भार । साहुको पकरत चोरको छोड़त चुगलन को दरबार ॥ सुंदरि नारि पुरुष बिन झखत कुब्जा करत शृंगार । सूरश्याम कैसे निबहेगी अंधाधुंध दरबार ॥ ऊधो० ॥

॥ दसवां भाग भजन ॥ १ ॥

सोच न करेरे मनमें भोला देनेवाला है । गौरी अरधंग जाकें भंग को अहारा है ॥ सोच० ॥ हाथ में पिनाक लीन्हे सोई बैलवाला है ॥ गोरसो शरीर जाके और कंठ कालाहै । सोच० ॥ सोई अवधुत मेरो मोहिं प्रतिपाला है । दुष्टन के नाशिवे कोतीसरो नैन ज्वाला है ॥ सोच० ॥ देबीको सहाय मेरो सेवक निराला है। वोही मेरो स्वामी जाके गले मुंडमाल

है ॥ सोच ना करो मन० ॥ १ ॥

॥ भजन ॥

जननी मैं न जिवों बिनराम । रामलखण सिय बनको गमन कीन्हो, पिता गये सुरधाम ॥ होत प्रात हमहूं बन जावैं, अवध में है का काम । कपटी कुटिल कुबुद्धि अभागिन, कौन हन्यो तेरो ज्ञान । सुर नर मुनि सब दोष देतहैं । नाहिं कियो भल काम ॥ तुलसीदास बलि आस चरणकी, भयो बिधाता बाम ॥ २ ॥

॥ भजन ॥ ३ ॥

माई मोहिं लगै बृन्दाबन नीको । यमुना जल एक नीर बहत है भोजन दूध दही को ॥ माई० ॥ घर घर ठाकुर तुलसीपुजा दरशन श्रीपति जीको ॥ माई० ॥ चन्द्रसखी भजु बाल कृष्ण को कृष्ण बिना सब फीको ॥ माई० ॥

॥ भजन ॥ २ ॥

जाके प्रिय न राम वैदेहीं । तजिये ताहि कोटि

बैरी सम यद्यपि परम सनेहि ॥ तज्यो पिता प्रह
लाद बिभीषण बन्धु भरत महतारी । बलि गु
तज्यो कन्त ब्रज बनिता भई जग मंगल कारी
नातो नेह रामको जनियत सुहृद सुसेव्य जहांलैं
अञ्जन कहा आंखजेहि फूटी बहुत कहौं कहांलैं
सो तुलसीसबभांतिपरमनिधि पुज्यप्राणसेप्यारो । जासें
होय सनेह राम पद सोई हितु हमारो जाके० ॥ २

॥ दसवां भाग । भजन ॥ १ ॥

भजुमन रामचरन दिनराती । रसनाकस न भज
तू हरिपद सुमिरत क्यों अलसाती ॥ भज० ।
जाके कहत दहत दुख दारुण सुन त्रै ता
बुझाती । सुनत सुयश सुशील सो हरिजन दे
सलाह मोहाती ॥ रामचन्द्र को नाम अमिय रस
सोहरस काहे न खाती । सम्बत् सोलहसैं इकतीस
जेठ बदी छठ स्वांती । तुलसीदास एक बिनय करत
हैं प्रथम अरज की पाती ॥ २ ॥

॥ भजन ॥ ३ ॥

भज्जु राधे कृष्ण मोहन मदन मुरारी । मोर मुकुट धर मोर पक्ष बैजन्ती माला धारी । शंख चक्र धर गदा पदुम धर कानन कुण्डल है भारी ॥ भ० ॥ १ ॥ भाल तिलक धर हाथ लकुट धर कांधे कामरि कारी । ऐसी मूरति मन बसी हमारे मुख पर बंशी धरे गिरधारी ॥ भज० ॥ २ ॥ बृन्दाबन में रास रच्यो है मुरली बाजै अतिप्यारी । सूरदास छबि कहं लागि बरणो हरि चरणन पर बलिहारी ॥ ३ ॥

॥ बारहवां भाग ॥ भजन ॥ १ ॥

॥ श्री जगरनाथजी के ॥ भजन ॥ १ ॥

ठाकुर भले बिराजोजी । ओड़ीसा जगन्नाथपुरी में भले बिराजोजी ॥ बलभद्रजी के भैया० ॥ टेक ॥ कबसे छोड़ी मथुरा नगरी कबसे छोड़ी काशी । झार खण्ड में आय बिराजे बृन्दाबन के बासी ॥ १ ॥ सत युग छोड़ी मथुरानगरी द्वपार छोड़ी काशी ॥ कालि युग में तो आय बिराजे बृन्दाबन के बासी ॥ २ ॥

उड़िया मांगे खिचड़ी बंगाली मांगे भात ॥ साधू मांगे दर्शन महाप्रसाद ॥ ३ ॥ दाल भी रांधा भात भी रांधा परवल की तरकारी । मीन मारिके भोग लगावैं अधम जात बंगाली ॥ ४ ॥ गांव गांव में बाग बगीचा गली गली फुलवारी ॥ घर २ देखो केला नारियल घर २ ठाकुर बाड़ी ॥ ५ ॥ दो २ कोस पर हाट लगाइ पांच कोस पर चट्टी ॥ चलते २ पांव पिराने सरीर होगई मट्टी ॥ चट्टी २ बनियां लूटे और लूटे चपरासी ॥ सिंह दरवाजे पंडा लूटे जात्री भये उदासी ॥ ७ ॥ सोलह हाथकी साड़ी पहिरे ऊपरकी किनारी । सास सवुर की लाज न राखत आधी टांग उघारी ॥ ८ ॥ बंगालिन बेटी परम सुंदरी उनकी लंबी चोटी ॥ भाव भक्ति को मर्म न जाने उनकी गरदन मोटी ॥ ० नील चक्र पर ध्वजा बिराजै मस्तक सोहैं हीरा ॥ ठाकुर आगे दासी नाचै गावैं दास कबीरा ॥ इति ॥

जे० एल० राय द्वारा काशी नागेश्वर प्रेस में छपवाया।